पाठ 14
नीति के दोहे

आइए सीखें

● दोहों का सस्वर वाचन ● दोहों का मूलभाव ग्रहण करना ● शब्दों के पर्यायवाची, विलोम तथा शुद्ध रूप जानना ● तत्सम एवं तद्भव शब्दों की समझ।

1. आवत हिय हरषे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
   तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह।।
2. तुलसी संत सुअम्ब तरु, फूलें फरहिं पर हेत।
   इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

तुलसीदास

3. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
   औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होय।।
4. जो तोकूँ काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
   तोकूँ फूल के फूल हैं, बाकूँ है तिरसूल।।
5. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
   पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

कबीर

6. रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
   जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि।।

रहीम

शिक्षण संकेत– ● दोहों का भाव स्पष्ट करने के लिए कहानी/संस्मरण/प्रेरक प्रसंग/घटना का उदाहरण दे सकते हैं। ● बालसभा में दोहा, अन्त्याक्षरी करवाएँ। ● बच्चों को बताएँ कि दोहे में दो पंक्तियाँ होती है। सस्वर गायन करवाएँ।

तुलसीदास, कबीरदास और रहीम भक्तिकाल के महान कवि है। इन्होंने भक्ति नीति, ज्ञान और व्यवहार की बड़ी–बड़ी बातों को सरल उदाहरणों के माध्यम से दोहों में समझाया है।

शब्दार्थ

हिय–हृदय। हरषै–प्रसन्न होना। नैनन–आँखों में। सनेह–स्नेह, प्रेम। कंचन–सोना। मेह–मेघ, बादल। बानी–वाणी, बोल, वचन। आपा–अहंकार। औरन–दूसरों को। सीतल–शीतल,ठण्डा, लघु–छोटा। डारि–छोड़ना। तोकूँ–तुम्हारे लिये। बुवै–बोये। ताहि–उनके लिये। बोय–बोना। वाकूँ–उसके लिये। सुअम्ब–मीठे आम। तरु–वृक्ष, फरहिं–फलते हैं। परहेत–दूसरों के लिये। पाहन–पत्थर। हनत–मारना। पंथी–राहगीर, पथिक।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) तुलसीदास जी ने कहाँ जाने के लिए मना किया है?

(ख) हमें कैसी वाणी बोलना चाहिए?

(ग) रहीम ने छोटों के महत्व को किस प्रकार समझाया है?

(घ) जो हमारा बुरा चाहता हो, उसके साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

(ङ) खजूर का पेड़ बड़ा होने पर भी उपयोगी क्यों नहीं है?

(च) कवि ने सन्त की तुलना आम के वृक्ष से क्यों की है?

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) आवत हिय हरषै नहीं ——————————।

(ख) पंथी को छाया नहीं ——————————।

3. निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने सही (✓) का एवं गलत के सामने गलत (X) का चिह्न लगाइए–

(क) जहाँ सम्मान न मिले वहाँ जाना चाहिए।

(ख) जो तुम्हारी बुराई करता हो तुम्हें भी उसकी बुराई करना चाहिए।

(ग) हमें सदैव मीठी वाणी बोलना चाहिए।

(घ) समय पर छोटी चीज भी काम आती है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ लिखिएः–

(क) आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।

(ख) ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।

(ग) जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

कंचन, नैन, नदी, जंगल, मेह, बानी

पढ़िए और समझिए –

क	ख
भीतर	बाहर
बड़ा	छोटा

यहाँ पर स्तम्भ क में दिए शब्द का स्तम्भ ख में विपरीत अर्थ बताने वाला शब्द है।

ध्यान रखिए–

एक दूसरे के विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विपरीतार्थ या विलोम शब्द कहलाते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

काँटा, कठोर, शीतल, ज्ञानी

आइए, समझिए–

सूरज	सूर्य
आग	अग्नि
पत्ता	पत्र

यहाँ पहले सामान्य बोलचाल के शब्द हैं, किन्तु उनके समक्ष उनके मूल रूप दिए गए हैं, जो संस्कृत भाषा के शब्द हैं। बोलचाल में इनके रूप बदल गए हैं। इन्हें **तत्सम और तद्भव** शब्द कहते हैं।

तत्सम शब्द– संस्कृत भाषा के जो मूल शब्द हिन्दी में बोले व लिखे जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे : सूर्य, अग्नि, पत्र।

तद्भव शब्द– ऐसे शब्द जो मूलरूप में संस्कृत के हैं किन्तु हिन्दी में जिनका रूप बदल गया है, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे : सूरज, आग, पत्ता।

3. निम्नलिखित तालिका में दिए गए तद्भव और तत्सम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए–

तद्भव शब्द	तत्सम शब्द
हिय	पत्थर
सनेह	शीतल
तिरसूल	नयन
नैन	स्नेह
सीतल	हृदय
पाहन	त्रिशूल

4. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रहिमन देख ——— को ——— न दीजिए डारि। (लघु, बड़ेन)

(ख) जो तोकूँ ——— बुवै, ताहि बोय तू ——— । (फूल, काँटा)

(ग) आवत हिय ——— नहीं, नैनन नहीं ———। (हरषै, सनेह)

योग्यता विस्तार–

- तुलसीदास, कबीरदास और रहीम के नीति सम्बन्धी कुछ दोहे खोजकर याद कीजिए और उन्हें लिखकर अपनी कक्षा में टाँगिए।
- सदाचार और सद्व्यवहार से सम्बन्धित कुछ वाक्य संग्रहीत कीजिए और कक्षा में सुनाइए।